एम.एच.डी.-14
हिन्दी उपन्यास-1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 14
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-14/टीएमए/2022-2023
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10×4= 40

(क). अब तक उमानाथ ने सुमन के आत्मपतन की बात जाह्नवी से छिपायी थी। वह जानते थे कि स्त्रियों के पेट में बात नहीं पचती। यह किसी–न–किसी से अवश्य ही कह देगी और बात फैल जाएगी। जब जाह्नवी के स्नेह व्यवहार से वह प्रसन्न होते तो उन्हें उससे सुमन की कथा कहने की बड़ी तीव्र आकांक्षा होती। हृदय सागर में तरंगें उठने लगतीं, लेकिन परिणाम को सोचकर रूक जाते थे। आज कृष्णचन्द्र की कृतघ्नता और जाह्नवी की स्नेहपूर्ण बातों ने उमानाथ को निःशंक कर दिया, पेट में बात रुक सकी। जैसे किसी नाली में रुकी हुई वस्तु भीतर से पानी का बहाव पाकर बाहर निकल पड़े उन्होंने जाह्नवी से सारी कथा बयान कर दी।

(ख). मैं नहीं चाहता कि वे लोभ के वश अपने बाल–बच्चों को छोड़कर कम्पनी की छावनियों में जाकर रहें और अपना आचरण भ्रष्ट करें। अपने गाँव में उनकी एक विशेष स्थिति होती है। उनमें आत्म–प्रतिष्ठा का भाव जाग्रत रहता है। बिरादरी का भय उन्हें कुमार्ग से बचाता है। कम्पनी की शरण में जाकर वह अपने घर के स्वामी नहीं, दूसरे के गुलाम हो जाते हैं और बिरादरी में बन्धनों से मुक्त होकर नाना प्रकार की बुराइयाँ करने लगते हैं। कम–से–कम मैं अपने किसानों को इस परीक्षा में नहीं डालना चाहता।

(ग). सूरदास कहाँ तो नैराश्य ग्लानि चिंता और क्षोभ के अपार जल में गोते खा रहा था कहाँ यह चेतावनी सुनते ही उसे ऐसा मालूम हुआ, किसी ने उसका हाथ पकड़कर किनारे पर खड़ा कर दिया। वाह! मैं तो खेल में रोता हूँ। कितनी बुरी बात है लड़के भी खेल में रोना बुरा समझते हैं रोने वाले को चिढ़ाते हैं, और मैं खेल में रोता हूँ। सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी–पर–बाजी हारते हैं, चोट–पर–चोट खाते हैं, धक्के–पर–धक्के सहते हैं; पर मैदान में डटे रहते हैं, उनकी त्यौरियों पर बल नहीं पड़ते। हिम्मत उनका साथ नहीं छोड़ती, दिल पर मालिन्य के छींटे भी नहीं आते, न किसी से जलते हैं, न चिढ़ते हैं। खेल में रोना कैसा ? खेल हँसने के लिए, दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नहीं।

(घ) यह कहते–कहते रतन की आंखें सजल हो गई। जालपा अपने को दुःखिनी समझ रही थी और दुखी जनों को निर्मम सत्य कहने की स्वाधीनता होती है। लेकिन रतन की मनोव्यथा उसकी व्यथा से कहीं विदारक थी। जालपा के पति के लौट आने की अब भी आशा थी। वह जवान है, उसके आते ही जालपा को ये बुरे दिन भूल जाएंगे। उसकी आशाओं का सूर्य फिर उदय होगा। उसकी इच्छाएं फिर फूले–जलेंगी। भविष्य अपनी सारी आशाओं और आकांक्षाओं के साथ उसके सामने था–विशाल, उज्ज्वल, रमणीक। रतन का भविष्य क्या था? कुछ नहीं, शून्य, अंधकार!

2. 'प्रेमचंद' की जीवन दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 10
3. 'सेवासदन' के औपन्यासिक शिल्प का विवेचन कीजिए। 10
4. 'रंगभूमि' उपन्यास के आधार पर सूरदास की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। 10
5. 'गबन' के रचनात्मक उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5×4= 20
   (क) प्रेमचंद के कहानी संबंधी विचार
   (ख) प्रेमचंद की जीवन दृष्टि
   (ग) 'गबन' की भाषा
   (घ) विनय और सेवा समिति